प्रश्न (4) मनबोधक □ शिशु □ कविताक भावार्थ लिखू।

उतर □ महाकवि मनबोध रचित क्रिष्ण जन्म कैं तेसर अध्यामे भगवान श्रीकृष्ण बाल □ लीलाक वर्णन भेल अछि। ओहि अंश के एतय पाठमे सम्मिलित कैल गेल अछि ।

कतो एक दिवस जखन बिति गेल ।

हरि पुन हथगर □ गोरगर भेल्॥

श्रीकृष्ण त लीलाधारी ठीकाह । हुनक एक लीलक वर्णन एतय भेल अछि। बाल कृष्ण जखन कुछु हथगर गोरगर भेलाह त अपन लील कैल । नैना रूपधारी कृष्ण जत तत जाइत रहैत छलाह । कतेको बेर अँगनहुँ सँ बहरा जाथि ।माता यसोधा डेन पकरि □ पकरि के अँगन अनथि हुनका देखि माता हष्रित होइत छथि।

कए बेरि आगि हातसँ छीनु ।

कए बेरि पकला तकला बिनु॥

Scanned by CamScanner

कतेको बेर हाथ सँ आगिके छुबि लेलाह त पकला जखन जखन माएक ध्यान दोसर दिश गेल कतेको बेर हाथसँ साँप पकरी लैत छथी । कतेको बेर चुन के दहि बुक्षि खा लेल्हि।

कहलन्हि सिखबह ह्मरहि ताहि।

टाँग तोरिअ तँ केहो हम नाहि ॥

माए कहैत छथि एतेक तंग करब त टाँग तोरि देव ,अहाँ हमरो सँ सिखब अहाँ हमर बात नहि मानैत छी । अही हमर सभ किओ भेल छी , मुदा अहाँक नडटैसँ हम अकच्छ भेल छी । एतबा कहि माए जशोदा बाल □ कृष्ण डांर मे डोरी लगा उखरिमे बान्हि देलन्हि । बजलीह आव पराउ त अहाँ, बान्हल रहू । उखरि मे बन्हला बाद जशोदा निसंक भ अपन काजमे लागि गेलीह।

भरि भरि पाँज उखरि औघराऔल।

बाल कृष्ण ओहि पैघ उखरिकेँ ओघरावैत दुवार पर आबि गेलाह । दुवारक आगांमे टूटा विशाल गाछ छल ।

Scanned by CamScanner